ज्ञान - विज्ञानं विमुक्तये

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

NATIONAL SEMINAR

जनजातीय महिलाओं की समस्या, समाधान और विकास

9 – 10 अक्टूबर 2015

संक्षेपिका

ABSTRACT

आयोजक

हिन्दी विभाग

शासकीय विजय भूषण सिंह देव कन्या महाविद्यालय

जशपुर नगर (छ.ग.)

प्रायोजक

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, मध्यक्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल (म.प्र.)

क्र.	शीर्षक	शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
1.	आदिवासियों में शिक्षा विकास की प्रमुख समस्याएँ एवं चुनौतियां	डॉ. श्रीमती के. जे. श्रीवास्तव	1-2
2.	जशपुर जिला (छ.ग.) में अनुसूचित जनजातियों का एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ. अजीत कुमार यादव	3-4
3.	जांजगीर–चांपा जिला (छ.ग.) में अनुसूचित जनजातियों का प्रतीक अध्ययन	श्री राजीब जाना	5-6
4.	जनजातिय महिलाओं की सामाजिक स्थिति – एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	डॉ. यू.एस. श्रीवास्तव	7
5.	सरगुजा अंचल के आदिवासी समाज में स्त्रियों की स्थिति : एक अध्ययन	डॉ तारणीश गौतम डॉ सुषमा भगत प्रो. चन्द्र भूषण मिश्र	8-9
6.	Chhattisgarh Tribal Women's Present Situation: Opportunities & Challenges	Mr. Soumen Brahma Dr. Manoj Sinha Dr. Prashant Gouraha	10-11
7.	जनजातीय महिलाओं में सामाजिक चेतना : दशा और दिशा	श्रीमती स्नेहलता खलखो डॉ. जुगल किशोर कुजूर	12-13
8.	जनजातीय महिलाओं की आर्थिक समस्याओं की दशा एवं दिशा	श्री सुशील कुमार टोप्पो श्रीमती क्रेसेन्सिया टोप्पो	14-16
9.	जनजातीय महिलाओं की समस्याएं, समाधान एवं विकास (छ.ग.)	श्री सुशील एक्का	17
10.	जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति	डॉ. भावना कमाने डॉ. (श्रीमती) शशिकला सिन्हा	18-19
11.	जनजातिय कल्याण – संवैधानिक प्रावधान	डॉ. अनिल कुमार	20-22
12.	जनजातीय महिला सशक्तीकरण और मानवाधिकार	श्री ज्वाला प्रसाद मिरी	23-24
13.	Problems of Tribal Women, Solutions and Development Subtitle: A new paradigm shift for Tribal Development Strategy	Dr. Papia Chaturvedi	25
14.	वर्तमान में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक स्थिति	डॉ. कुसुम माधुरी टोप्पो श्री. किशोर मिंज	26-27
15.	जनजातीय जीवन और संस्कृति : उराँव महिलाओं के संदर्भ में	डॉ. (श्रीमती) इसाबेला लकड़ा डॉ. (श्रीमती) कल्याणी जैन	28-29

जनजातीय महिलाओं की आर्थिक समस्याओं का दशा एवं दिशा

सुशील कुमार टोप्पो
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शास.श्यामा प्रसाद मुखर्जी महा.सीतापुर
जिला – सरगुजा (छ.ग.)

श्रीमती क्रेसेन्सिया टोप्पो
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शास.श्यामा प्रसाद मुखर्जी महा.सीतापुर
जिला – सरगुजा (छ.ग.)

संक्षेपिका

आदिवासी अपने अल्प प्राविधिक विकास, आर्थिक दैन्य और सामाजिक, सांस्कृतिक सामंजस्य की कतिपय जटिल समस्याओं के कारण देश के लिए एक विशेष समस्या बन गये हैं। इसमें आदिवासी महिला भी शामिल हैं क्योंकि किसी वर्ग या समुदाय की समस्याओं से महिला अलग नहीं हो सकती। वह तो परिवार की धुरी होती है। आदिवासी महिलाओं की समस्याओं को जानने के पूर्व आदिवासी का अर्थ जानना आवश्यक है। आदिवासी का अर्थ मूलवासी है। महात्मा गांधी ने आदिवासियों को गिरीजन कहकर पुकारा। जिसका अर्थ है पहाड़ पर रहने वाले लोग। आदिवासियों का रहन–सहन, रीति–रिवाज, अपनी एक अलग विशेषता लिए हुए है। उनकी एक अलग संस्कृति होती है। जो उन्हे दूसरे समाज से अलग करती है। उनकी पारिवारिक व्यवस्था, सामुदायिक जीवन, व्यवसाय तथा उनके समाज में नारी की स्थिति और धार्मिक संगठन की भिन्न–भिन्न संरचना होती है।

जनजातीय समाज और उनकी महिलाओं की कुछ सामान्य समस्याए हैं जिन्हें जनजाति के लोग देश की अन्य सम्पूर्ण ग्रामीण जनता के समान ही भुगत रहे जैसे सामाजिक–आर्थिक समस्याएँ। ये समस्याएं भूमि प्रबंध, नीतियो, लगान नीतियो, वन नीतियों या नई प्रशासन व्यवस्था के कारण पैदा हो रही हैं। उनके जल, जंगल, जमीन संबधी परम्परागत अधिकारों का अपरदन हो रहा है। जिसके कारण उनकी आर्थिक समस्याए विकराल रूप धारण करती जा रही है जो निम्नलिखित है :–

- कृषि में पूर्ण कालिक काम न मिलना।
- श्रम शक्ति उपयोग के बदले पारिश्रमिक भुगतान में अंतर करना।
- क्षमता अनुरूप काम न मिलना।
- वन संबंधी परम्परागत अधिकारों का अपरदन।
- भूमि संबंधी परम्परागत अधिकारों का अपरदन।
- बाजार युग में उनकी घरेलू लघु उद्योगों का गला घोटा जाना।
- कृषकों के ऋणग्रस्ता के कारण उनकी महिलाओ का बधवा मजदूर बनना।
- मद्यपान का बढ़ता ग्राफ का आर्थिक जीवन पर बुरा प्रभाव।

- निर्धनता की समस्या।
- व्यक्तिगत आय के स्त्रोत की कमी।
- बचत एवं पूंजी निर्माण में कमी आदि।

आदिवासियों एवं उनकी महिलाओं के आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए निम्न दिशाएं सुझाया जा सकता है :–

1. गहनतम वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा आदिवासी के सामाजिक संगठन, आर्थिक संरचना, उस पर हक, सम्पत्ति उत्पादन, आय एवं बचत के मूल्य का ज्ञान उपलब्ध कर कल्याण योजना तैयार कर ईमानदारीपूर्वक लागू करना।
2. विभिन्न प्राविधिक आर्थिक विकास के धरातलों पर उनकी समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन करना।
3. उनकी परम्परागत सामूहिक संगठन भावना की शक्तियों की और मजबूती के लिए समूह या सघ वाली कार्य योजना तैयार करना।
4. उनकी संस्कृति के सहज परिवर्तन और परिवर्तन विरोधी पक्षों का विश्लेषण करना।
5. आदिवासी क्षेत्रों मे कार्य करने वाले प्रशासकों तथा अर्द्धशासकीय और सामाजिक कार्यकर्ताओं को आदिवासी जीवन से परिचित कराने और इन समूहों में किये जाने वाले कार्य को समझाने के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।
6. विकास योजनाओं का निर्माण जो आदिवासी समूहों की आवश्यकताओं का क्षेत्रीय और राष्ट्रीय आवश्यकताओं से समन्वय कर सकें।
7. इन योजनाओं द्वारा जनित प्रवृत्तियों की गतिविधि और प्रमाणों का अध्ययन और उनका हानिकारक तत्वों को निराकरण का प्रयत्न करना आदि।

दुनिया की बदलती तस्वीर में सर्वाधिक परिवर्तन महिलाओं के जीवन मे आया है। उनका कार्यक्षेत्र का विस्तार हुआ है। आज स्वतत्र रूप से जीविका उपार्जित करने वाली महिलाएं अन्य महिलाओं के लिए एक आकर्षण है और आर्थिक स्वतंत्रता के कारण परिवार में उनके महत्व को देखकर अन्य महिलाओं की भी आर्थिक जीवन में प्रवेश करने का प्रोत्साहन मिल रहा है ये परिवर्तन जनजातीय महिलाओं में भी देखी जा रही है। आवश्यकता है शिक्षा को बढ़ावा देने की। क्योंकि शिक्षा के बिना अपने प्रदत्त अधिकारों का ज्ञान एवं उपयोग असभव होगा। स्त्री शिक्षा पर जोर देने का महात्मा गांधी के विचारों का उल्लेख आवश्यक होगा कि "महिलाओं का सशक्तिकरण तभी हो सकता है जब उनको कार्यों एवं अधिकारों का ज्ञान होगा और उसको प्राप्त करने की शक्ति होगी, इसके लिए शिक्षा ही सबसे बड़ा हथियार है।" अत: शिक्षा दिलाने तथा रोजगार प्राप्त करने में

समाज द्वारा प्रेरणा की जरूरत है। इसके बिना जनजातीय महिलाओं के समस्याओं का समाधान असंभव है। मनु ने भी कहा था –"जहां महिलाओं की दुर्दशा होती है, वहां सम्पूर्ण परिवार विनाश को प्राप्त होता है, किन्तु जहां वे सुखी हैं वहां परिवार सदैव समृद्धि को प्राप्त करना है।" एक बेहतर आर्थिक स्थिति निर्मित हो, सरकारी, गैरसरकारी संगठनों के ईमानदारी पूर्ण प्रयास एवं स्वयं महिलाओं के जागरूक होने की अति आवश्यकता है।

स्वच्छ भारत स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर